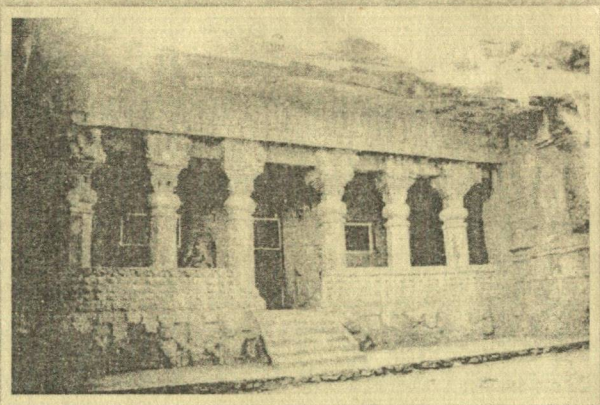

Cave 3

Pandulena Caves

Cave opening Hours
Sunrise to Sunset

Entrance Fee :
For Indian Citizen : **Rs. 5/-**
For Foreigner : **$2 or Rs. 100/-**

For Childrens below 15 years : Free Entry

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

Archaeological Survey of India
Aurangabad Circle
Aurangabad

The group of twenty-four caves, locally known as **Pandu-lena** or **Pandava's Caves** (Lat.20°05'; Long. 73°45') were cut in a long line on the north face of a hill, called Trirashmi in early times, 8 k.m. from Nasik City . The caves are hewn at a height of nearly 60-70 m from the surrounding plains. The main interest of this group lies not only in its bearing on its walls a number of inscriptions of great historical significance belonging to the reign of **Satavahanas** and **Kshaharatas** or Kshatrapas, but also in its representing a brilliant phase in the rock-cut architecture of the second century A.D., to which period came up the majority of the caves.

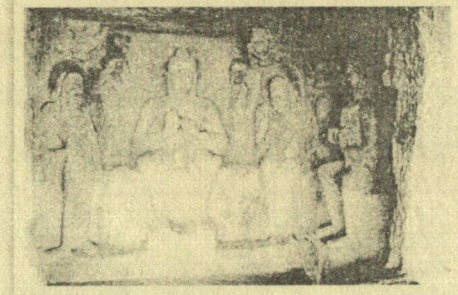

Interior, Cave 23

There are altogether twenty-four excavations mostly belongs to the early Centuries. In later times not only some of the earlier caves (Hinayana) were altered, reconditioned and embellished with the figures of Lord Buddha and Bodhisattvas, but a few new ones were added. Besides the actual caves there are water tanks and cisterns chiefly in conjunction with the caves. Both the Satavahanas and Kshaharatas were active patrons of this establishment and the two largest Monasteries (Cave No.3 and 8) were caused to be excavated by them. The remaining caves were the gifts of the common people, including monks and writer.

The important caves in this group are Cave No.13 which is a Chaitya-Griha and cave No.3,8,10,23 are Viharas. **Cave No.13** is the only Chaitya cave of this group, belongs to circa 1st century B.C. The Chaitya divided into the usual nave; apse and aisles by octagonal pillars supported the entablature from which the vault of the nave rises. The apse has the usual Votive Stupa. The carving over the doorway is similar to wooden work.

Among the Monasteries cave No.3,8,10,23 have outshone others in Size, Planning and splendors have elicited and acclamation on account of their unique combination of the architectural grandeur and sculptural embellishment. **Cave No.3** named as **"Gautamiputra Cave"** because it contain the inscription of Gautami Balasari, the mother of the most powerful Satavahana king. This is the largest Vihara with a bench on three sides and eighteen cells, seven on the right side, six in the back and five in the left besides two openings from the Verandah. **Cave No.8** named as **"Nahapana Cave"** because it contain six inscriptions of the family of Nahapana, it is the second largest Vihara in this series and one of the most interesting, it is purer in style and superior in execution. **Cave No.10** is also known for it's decorated pillars which considered being the best specimen of this age.

The main beauty of these caves lies in its dignified facade, effectively composed and carved. The fleshy bodies, heavily emphasized sashes turbans and other details of the costume are strictly within the Indian tradition. The beautiful pillar capitals, adored with the animals and composite figures with the riders.

The caves of Pandulena not only represents their artistic grade but at the same time they represents Art, Culture, Religious and Social setting of ancient time.

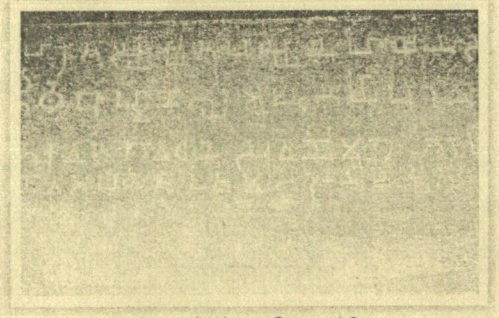

Inscription, Cave 10

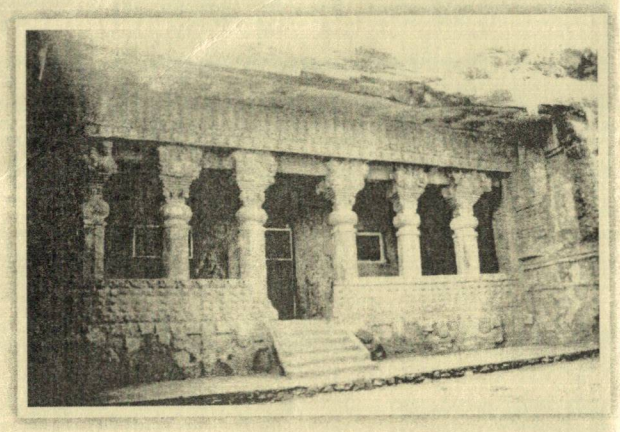

गुफा क्र.3

पाण्डव गुफायें

दर्शकों के लिये स्मारक खुलने का समय :
सूर्योदय से सूर्यास्त तक

प्रवेश शुल्क :
भारतीय नागरिकों के लिये : **5 रू.**
अन्य के लिये : **2 अमेरिकी डॉलर या 100 रू.**

15 वर्ष से कम उम्र के दर्शकों के लिये प्रवेश निःशुल्क

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
औरंगाबाद मंडल
औरंगाबाद

प्राचीन काल में बौद्धधर्म की संपन्नता के अवशेष संपूर्ण विश्व में बिखरे मिलते हैं। इन्ही प्राचीन बौद्ध अवशेष श्रृंखला की एक कडी पाण्डव गुफायें (20°05' उ; 73°45' पू) हैं। सह्याद्री पर्वत माला की एक स्वतंत्र श्रृंखला त्रिरश्मी पर्वत के नाम से प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध है, जो नाशिक से 8 कि.मी. दूरी पर स्थित है। त्रिरश्मी पर्वत के उत्तरी छोर पर धरातल से 70-80 मीटर उँची बौद्ध धर्मीय 24 गुफायें प्राचीन काल की संपन्नता की साक्षी हैं, और दूसरी शताब्दी ईसा के गुफा निर्माण पद्धती का "उत्कृष्ठ दर्पण" है। गुफायें स्थापत्यिक वैभव के साथ अभिलेखीय साक्ष्य के कारण भी भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

गुफा क्र.23

पाण्डव गुफाओं को पाण्डु लेणी समूह के नाम से भी जाना जाता है, जिन्हे पश्चिम से पूर्व तक 1 से 24 संख्या में श्रेणीबद्ध किया गया है। अधिकांश गुफा उत्खनन कार्य ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी से लेकर ईसा प्रथम शताब्दी तक संपन्न हुआ,जो बौद्ध धर्म की विशिष्ट विचार मान्यता **"हीनयान"** से सम्बंधित थी। गुफा उत्खनन के साथ कुशल कारीगरों ने तत्कालीन जलयोजन क्षमता का परिचय देते हुये गुफाओं के बाह्यभाग में **"पानी के कुण्ड"** का भी उत्खनन किया।दूसरी शताब्दी ईसा में विभिन्न राजवंश, जैसे सातवाहन, क्षत्रप आदि के साथ सामान्य जनता ने भी बौद्ध धर्म को सराहा और सहायता दी। यही काल इन गुफाओं का स्वर्णकाल था,जब हीनयानी साधारण व अलंकाररहित गुफाओं को भगवान बुद्ध और बोधिसत्व की मूर्तियोंसे अलंकारित, सुसज्जित व संवर्धित किया गया। राजाश्रय अभाव और बौद्ध धर्म के पतन के कारण यह गुफायें सातवी शताब्दी के अंत मे कालबाह्य हुई।

इन गुफाओं के समूह में कुछ गुफायें अति महत्वपूर्ण है, गुफा क्र.13 इस समूह का एकमात्र चैत्यगृह है तथा 3,8,10,23 विहार अपने आप में अनेक विशेषता संजोये हुये है। यह गुफायें अपनी विशिष्ट आकार, अप्रतिम रचना, उत्कृष्ठ अलंकरण, स्थापत्यिक वैभव व अप्रतिम मूर्तिशिल्प का अभूतपूर्व संगम है। **गुफा क्र.13** इस समुदाय का एकमात्र चैत्यगृह है, जो अपने सादे स्तंभ व भव्य स्तूप रचना के कारण वैशिष्टपूर्ण है।**गुफा क्र.3** को सातवाहन सम्राज्ञी, गौतमीपुत्र सातकर्णी की माता, गौतमी बलश्री के कारण **"गौतमीपुत्र गुफा"** भी कहा जाता है। यह गुफाविहार यहाँ की सबसे बडी रचना है जहाँ चैत्यगृह, सभामंडप के साथ भिक्षुओं के निवास हेतु अठारह कोठरीयाँ उत्खनित की गयी हैं।

गुफा क्र.8 इन गुफाओं में दूसरा बडा विहार है, जिसे क्षहरात-क्षत्रप राजा नहपान के नाम से **"नहपान गुफा"** की संज्ञा दी गयी।गुफा की विशेषता इसकी विशिष्ट शैली व अप्रतिम रचना है। **गुफा क्र.10** अपने अलंकृत स्तंभ के लिये जानी जाती है, जो भारतीय कला का उत्कृष्ठ नमूना है।

इन गुफा समुदायों में प्राचीन भारत के अभिलेखों का अभूतपूर्ण संग्रहालय है, जहाँ विभिन्न राजवंश सहित सामान्य जनता के लेख भी उत्कीर्णीत है। इन अभिलेखों से प्राचीन भारत के राजकीय इतिहास की अनमोल, अपर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है। इनमें स्थूल - शरीर रचना युक्त मानवशिल्प कृतीयाँ प्राचीन भारत की वेशभूषा, केशभूषा, अलंकरण व सामाजिक जीवन को प्रदर्शित करती है।

पाण्डव गुफा समूह प्राचीन भारत की धार्मिक, कलात्मक, तकनीकी श्रेष्ठता को प्रदर्शित करते हुये, राजकीय व सामजिक जानकारी प्रचुर मात्रा में प्रदान करता है।

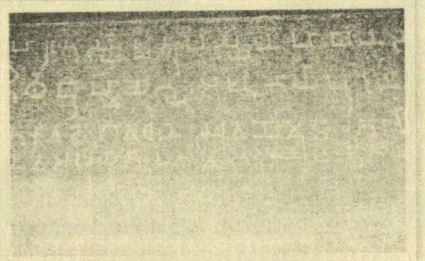

अभिलेख, गुफा क्र.10